

---

## Gangastotram 3

---

### गङ्गास्तोत्रम् ३

---

#### Document Information



---

Text title : Gangastotram 3

File name : gangAstotram3.itx

Category : devii, devI, nadI

Location : doc\_devii

Transliterated by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Proofread by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Description/comments : Ganga Jnana Mahodadhi compiled by Acharya Ramapada Chakravarty

Latest update : December 7, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 7, 2019

*sanskritdocuments.org*

---



गङ्गास्तोत्रम् ३



श्रीगणेशाय नमः ।

अथानन्तरतो देवि समयास्तोत्रमुत्तमम् ।

येन स्तुता सिद्धमूली भक्षिता फलदा भवेत् ॥ १ ॥

संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे ।

भैरवानन्ददीप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा ॥ २ ॥

नमामि यामिनीनाथलेखालङ्कृतमस्तकाम् ।

भवानी भवसन्तापनिर्वापण-सुधानिधिम् ॥ ३ ॥

सिद्धिमूलीं श्रये देवी हीनबोधप्रबोधिनीम् ।

राजप्रजावशकरी कालकण्ठे त्रिशूलिनि ॥ ४ ॥

अज्ञानेन्धनदीप्ताग्रे ज्ञानविज्ञानरूपिणि ।

आनन्दाद्याहुतिप्रीते सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे ॥ ५ ॥

दण्डाधिरूढपरिपूरितभोगमोक्षां

मुण्डाक्रमेण मदनां जनकामिनीनाम् ।

आराधयामि बहुशत्रुपराजयन्ती

विश्वेश्वरी त्रिभुवनां विजयेति देवीम् ॥ ६ ॥

आनन्दनन्दिनीनन्दे सदावन्द्यपदद्वये ।

उल्लासकदलीकन्दे स्वच्छन्दे बोधरूपिणि ॥ ७ ॥

कवयः कवितालहरी कुरुते तत्त्वार्थदर्शनं पुंसाम् ।

अपहरति दुरितनिलयं किं किं न करोति संविदुल्लासः ॥ ८ ॥

संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी ।

संविदाश्रयणादेव तदात्मा पुरुषः स्मृतः ॥ ९ ॥

श्यामैव रामा कविरेव विद्वान् विद्यैव बन्धुर्धनुरेव शस्त्रम् ।

गङ्गैव तीर्थं स्मर एव धन्वी मार्गेषु माहेश्वर एव मार्गः ॥ १० ॥

कथञ्चिदेषा करुणाकटाक्षैर्निरीक्षते मां परदेवता चेत् ।  
वृथा कथाकल्पमहीरुहाणामलं च चिन्तामणिचिन्तनेन ॥ ११ ॥

अलिपिशितपुरन्धीभोगपुञ्जारतोऽहं  
बहुविधकुलमार्गारम्भसम्भावितोऽहम् ।  
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीं संश्रितोऽहं  
गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥ १२ ॥

वामोरुस्ते रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्रं  
तप्ता मुद्राश्चणकवटकाः सौकरं सुष्ठु मांसम् ।  
तन्त्री वीणा सरसकवयः सत्कथा सद्गुरुणां  
कौलो धर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ १३ ॥

कौलरहस्ये गलार्णवे । श्रीरस्तु ।  
इति समयाचारतन्त्रे गङ्गास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at  
gmail.com

---



*Gangastotram 3*

pdf was typeset on December 7, 2019



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

